! सृजनात्मकता !

Ques- Creativity सृजनात्मकता से आप क्या समझते हैं? सृजनात्मकता की पहचान कैसे की जा सकती है?

सृजनात्मकता की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। सृजनात्मकता तथा बुद्धि के आपसी सम्बन्ध को स्पष्ट कीजिये।

Ans !- परिचय !— मनुष्य की एक मौलिक विशेषता सृजनात्मता भी है। सृजनात्मता मनुष्य की बुद्धि पर निर्भर करती है। सृजनात्मकता के परिणामस्वरूप सम्पन होने वाले कार्यों में व्यक्ति की आत्माभिव्यक्ति तथा अभिप्रेरणा व आत्मानुभूति आदि तत्व आगे बढ़कर काम करने के तत्व निहित होते हैं। व्यक्ति की सृजनात्मक प्रक्रिया में उसकी क्रियाओं के माध्यम से आत्माभिव्यक्ति की विशेषता विद्यमान होती है। शिक्षा के क्षेत्र में भी सृजनात्मका का विशिष्ठ महत्व स्वीकार किया जाने लगा है। शिक्षाशास्त्रियों ने सृजनात्मकता का व्यवस्थित अध्ययन किया है तथा शिक्षा के क्षेत्र में इसकी भूमिका एवं महत्व को स्वीकार किया है। अब सृजनात्मकता के मापन के लिए अनेक परीक्षण भी तैयार कर लिए गए हैं।

सृजनात्मता (Creativity) का अर्थ व परिभाषा

सृजनात्मकता (Creativity) का अर्थ व परिभाषा

सृजनात्मकता का अर्थ :- सृजनात्मकता शब्द अंग्रेजी के Creativity शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। डॉक्टर बाॅमिल ने हिन्दी में Creativity शब्द के निम्नलिखित शब्द प्रस्तुत किये थे। (1) सृजनात्मक (2) रचनात्मक तथा (3) सर्जक इसी प्रकार डा॰ रघुवीर ने भी क्रियेटिवटी शब्द के लिए हिन्दी में निम्न शब्द प्रस्तुत किया (1) सृजन, उत्पन्न करना, सर्जित करना (4) बनाना

सृजनात्मकता की परिभाषा :-

(1) **स्टेन के अनुसार** → "जब किसी कार्य का परिणाम नवीन हो, जो किसी समय में समूह द्वारा उपयोगी मान्य हो, वह कार्य सृजनात्मकता कहलाता है।"

(2) **गुड के अनुसार** → "सृजनात्मकता वह विचार है जो किसी समूह में विस्तृत सातत्य का निर्माण करता है। सृजनात्मकता के कारक है - साहचर्य, आदर्शात्मक, मौलिकता, अनुकूलता, सातत्यता, लोच एवं तार्किक विकास की योग्यता।"

(3) **थेस्टन के अनुसार** - "वह क्रिया सृजनात्मक है जिसका हल सहायक प्राप्त हो जाए, क्योंकि इस प्रकार का हल विचार के लिए सदैव नवीनता लिए होता है।"

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि कुछ विशिष्ट प्रकार के कार्यों को सृजनात्मक कार्य कहा जाता है। तथा सृजनात्मक कार्य करने की क्षमता या योग्यता को सृजनात्मकता कहा जाता है।

सृजनात्मकता की पहचान

प्रत्येक व्यक्ति मे सृजनात्मकता पायी जाती है। कुछ व्यक्तियों में यह क्षमता अधिक होती है कुछ मे अपेक्षाकृत कम विकास हो पाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि सृजनात्मकता की पहचान कैसे की जाय। या सृजनात्मकता के क्या लक्षण है? इस विषय मे प्रोफेसर वेंकटामनैया ने स्पष्ट किया कि बालक की सृजनात्मकता की पहचान उसके निम्नलिखित गुणों द्वारा की जा सकती है।—

① मौलिकता (originality)

सृजनात्मकता का प्रमुख गुण एवं लक्षण व्यक्ति अथवा बालक की मौलिकता है। इस गुण अर्थात मौलिकता को अनेक रूपों मे देखा जा सकता है। मौलिकता के गुण से युक्त बालक साधारण से अधिक संवेदनशीलता पाई जाती है। उसमे प्रेरणाएँ प्रबल होती हैं तथा वह विद्यमान तथ्यों से परे भी देखता है। यह बालक विशेष बालक कहलाता है।

② स्वतन्त्र रूप से निर्णय लेने की क्षमता ⇒ किसी समस्या के उत्पन्न होने की स्थिति

क्या लक्षण है? इस विषय में प्रोफेसर बुकटामनैया ने स्पष्ट किया कि बालक की सृजनात्मकता की पहचान उसके निम्नलिखित गुणों द्वारा की जा सकती है।—

① मौलिकता (originality)

सृजनात्मकता का प्रमुख गुण एवं लक्षण व्यक्ति अथवा बालक की मौलिकता है। इस गुण अर्थात मौलिकता को अनेक रूपों में देखा जा सकता है। मौलिकता के गुण से युक्त बालक साधारण से अधिक संवेदनशीलता पाई जाती है। इसमें प्रेरणाएँ प्रबल होती हैं तथा वह विद्यमान तथ्यों से परे भी देखता है। यह बालक विशेष बालक कहलाता है।

② स्वतन्त्र रूप से निर्णय लेने की क्षमता ⇒ किसी समस्या के उत्पन्न होने की स्थिति में सृजनशील बालक स्वतन्त्र रूप से स्वयं ही निर्णय ले लिया करते हैं। इस गुण से युक्त बालक तथ्यों को अपने ढंग से प्रस्तुत करते हैं तथा साधारणतया अन्य व्यक्तियों के सुझावों को अधिक महत्व नहीं दिया करते।

③ हास-परिहास-प्रियता ⇒ दैनिक जीवन में हास-परिहास को समुचित स्थान देने वाले बालक में सृजनात्मकता विद्यमान होती है। सृजनशील बालक अपने खेलों में समुचित आनन्द लेते हैं। वास्तव में परिष्कृत हास-परिहास भी सृजनशीलता द्वारा ही सम्भव होता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि हास-परिहास की दक्षता भी सृजनात्मकता का एक लक्षण है।

④ संवेदनशीलता — बालकों में विद्यमान सृजनशीलता का एक लक्षण संवेदनशीलता भी है। सृजनात्मकता बालक सामान्य से अधिक संवेदनशील होते हैं। संवेदनशील बालकों की विशेषता यह होती है कि वे प्रत्येक कार्य को आवश्यक गम्भीरता से लेते हैं।

⑤ स्वायत्तता (Autonomy) — सृजनात्मकता का एक लक्षण बालकों में पाई जाने वाली स्वायत्तता (Autonomy) भी है। सृजनात्मक बालक अपनी प्रभुसत्ता के प्रति अधिक जागरूक होते हैं। सृजनात्मक बालकों को जो कार्य सौंपा जाता है उसे वे उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से पूरा करते हैं। वे पर कार्य को अपना समझकर करते हैं।

⑥ **उत्सुकता** :- सृजनात्मकता बालक एक लक्षण (पहचान) उत्सुकता है। सृजनशील बालकों में सामान्य से अधिक उत्सुकता पाई जाती है। उत्सुकता वश वे किसी भी सौंपे गए कार्य को पूरा करने के लिए भिन्न-2 ढंगों पर विचार करते हैं तथा भिन्न-2 ढंग से कार्य करते हैं।

सृजनात्मकता की विशेषताएँ (गुण) (प्रकृति) को

① सृजनात्मकता चिन्तन का एक ढंग है यह बुद्धि का पर्यायवाची नहीं है।

② सृजनात्मकता वास्तव में उत्पादन की क्षमता है यह एक प्रक्रिया है।

③ सृजनात्मकता की प्रक्रिया का एक निर्धारित लक्ष्य होता है। सृजनात्मकता की प्रक्रिया सामान्य रूप से व्यक्ति अथवा समूह एवं समाज के लिए लाभदायक होती है।

④ विशिष्ट प्रकार के चिन्तन के ~~फलस्व~~ परिणाम स्वरूप सृजनात्मकता व्यक्ति में विकसित होती है।

⑤ सृजनात्मकता व्यक्ति के लिए अभूतपूर्व हुआ करती है भले ही वे मौखिक हो या लिखित, मूर्त हो या अमूर्त अपने प्रत्येक रूप में यह क्षमता व्यक्ति को किसी नए एवं भिन्न उत्पादन के लिए निर्देशित करती है।

⑥ सृजन की योग्यता एवं क्षमता समाज द्वारा मान्यता प्राप्त ज्ञान के अर्जन पर आधारित होती है।

... तथा बुद्धि में सम्बन्ध :-

सृजनात्मकता तथा बुद्धि मे सम्बन्ध :-

सृजनात्मकता का अध्ययन करते समय सृजनात्मकता तथा बुद्धि के आपसी सम्बन्धों को जानना भी आवश्यक है। सामान्य रूप से समझा जाता है कि उच्च सृजनात्मकता वाले व्यक्तियों का बौद्धिक स्तर भी उच्च होता है परन्तु यह सत्य नहीं है। व्यवहार में देखा गया है कि अनेक उच्च सृजनात्मकता वाले व्यक्तियों का बौद्धिक स्तर उच्च नहीं था। यह भी सत्य नहीं है कि उच्च बौद्धिक स्तर वाले व्यक्तियों का सृजनात्मक स्तर भी अनिवार्य रूप से उच्च ही हो। वास्तव में सृजनात्मकता तथा बौद्धिकता को विभिन्न कारक प्रभावित करते हैं। कारकों के सन्तुलन की स्थिति के कारण सृजनात्मकता तथा बौद्धिकता दोनों का स्तर समान भी हो सकता है। बैरोन (Barron) ने एक अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि सृजनात्मकता तथा बुद्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध होता है परन्तु इस सम्बन्ध का स्तर निम्न ही होता है। वास्तव में सृजनात्मकता ~~तथा~~ बुद्धि के उच्च स्तर के लिए बुद्धि के अतिरिक्त कुछ अन्य तत्वों की भी आवश्यकता होती है। यह स्पष्ट है कि लेखकों, कवियों, कलाकारों, चित्रकारों एवं वास्तुकारों आदि में उच्च स्तर की सृजनात्मकता पायी जाती है। परन्तु यह अनिवार्य नहीं कि इन व्यक्तियों में बौद्धिकता का स्तर भी उच्च ही हो। किसी भी व्यक्ति की सृजनात्मकता शून्य नहीं होती है।

दूसरों से हटके (अलग) होना (मौलिकता कहलाती है) — रचनात्मकता / सृजनात्मकता (Creativity) (Utility)

मौलिकता (नवीनता) निर्माणता — उपयोगिता

सृजनात्मकता का तात्पर्य – सृजन (निर्माण) अर्थात रचना सम्बन्धी योग्यता [नव निर्माण करने की योग्यता] ऐसे बालक जो स्वयं की प्रेरणा से तथा नए विचारों के साथ किसी नयी वस्तु का सृजन करते हैं।

परिभाषाएं :-

जेम्स ड्रेवर के अनुसार – "सृजनात्मक मुख्यतः नवीन रचना या उत्पादन में होती है।"

स्टेन ,, – जब किसी कार्य का परिणाम नवीन हो जो किसी समय में समूह द्वारा उपयोगी मान्य हो वह कार्य सृजनात्मकता कहलाता है।" रोजर बरस्टीन – "सृजनशीलता 'उत्पाद' है।"

क्रो & क्रो ,, – "सृजनात्मकता मौलिक (नवीन) परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक क्रिया है।"

सृजनात्मकता का विकास

सृजनात्मकता का विकास बाल्यावस्था (5-6 – 12 वर्ष) तक में होता है। सर्वप्रथम बालकों के खेल में इसकी अभिव्यक्ति पायी जाती है। बालकों की आयु वृद्धि के साथ यह खेल के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में फैल जाती है। डेनिस व हैलमैन ने बताया था कि सृजनात्मकता लगभग – 30 वर्ष की अवस्था तक अपनी चरम सीमा (Maximum) पहुंच जाती है इसके बाद या तो यह स्थिर रहती है या इसमें अवनति प्रारम्भ हो जाती है।

(1) सृजनात्मकता जन्मजात व अर्जित (2) ,, ,, व्यावहारिक होती है — सृजनात्मकता की विशेषताएं — सृजनात्मक प्रक्रिया व परिणाम दोनों सार्वभौमिक है

1 – कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता (महसूस), कार्य में निष्ठा, समस्या समाधान की योग्यता, दूर दृष्टि, स्वयं निर्णय लेने की क्षमता, रचनात्मक कार्यों में रुचि, खुले दिमाग से सोचना etc (मातानुकूल/अभिरुचि)

सृजनात्मक बालक की शिक्षा

क्रिया द्वारा अधिगम, शाब्दिक व अशाब्दिक खेल सामग्री, पाठ्यक्रम का उचित आयोजन व दार्शनिक दृष्टि बोध का पाठ्यक्रम (चिन्तन)

Scanned with CamScanner

(चिन्तन

सृजनात्मकता का स्वरूप / प्रकृति

1. सृजनात्मकता जन्मजात व अर्जित
2. इसका विकास बाल्यावस्था से प्रारंभ होकर – 30वर्ष तक चरम पर पहुंचे
3. जिन्हे उन्हे माहौल नहीं मिलता सृजनात्मकता नष्ट हो जाती है
4. सृजनात्मकता व बुद्धि मे सकारात्मक संबन्ध
5. औसत से अधिक बुद्धि वाला (90-110) बालक सृजनशील हो सकता है
6. अधिक नियंत्रण से कठोर अनुशासन से भी सृजनात्मकता बाधक
7. सृजनात्मकता अपसारी चिन्तन पर आधारित है व बुद्धि अभिसारी चिन्तन पर आधारित है

सृजनात्मकता का मापन – प्रमुख गिलफर्ड ने इसके अलावा मैकिनॉल, जैक्सन, टोरेन्स ने भी। भारत में बाकर मेहन्दी व पासी ने परीक्षण

सृजनात्मकता शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग = J.P गिलफोर्ड।

अपसारी चिन्तन (प्रसार) Extent शब्द J.P गिलफोर्ड
(फैलने वाला) Divergent Thinking

जब कोई बालक अनेक बिन्दुओं / विकल्पों और पहले विचारों के बारे में प्रयोग सोचता है

Using imaginati out
कल्पना

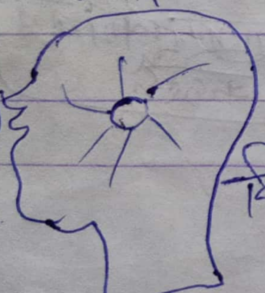

विचारों का दायरा बढ़ जाता है
अपसारी चिन्तन

अभिसारी चिंतन / Convergent Thinking

केवल एक ही बिन्दु पर केन्द्रित होकर चिन्तन करना

Using logic (तर्क)

Fact पर आधारित है
यांत्रिक तरीके से सोचते है

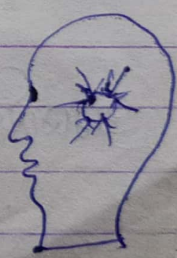

Q – राज्यपाल कौन
विधान सभा मे कितने Member

6 विचारों का दायरा सीमित होता है

[illegible] एक बार उठाएं दूसरा दो बार उठाएं।

सृजनात्मकता की प्रकृति

[↑ अ. उच्च शक्ति / सामान्य]

① जन्मजात व अर्जित होती है ② बुद्धि का सामान्य स्तर होना आवश्यक है (90-110)

③ बुद्धि — धनात्मक सहसम्बन्ध — सृजनात्मकता (प्रतिभाशाली बालक — सृजनशील होगा

④ शैक्षिक उपलब्धि — नकारात्मक सहसम्बन्ध — सृजनात्मकता — धनात्मक होता — सृजनशील बालक — प्रतिभाशाली हो सकता न भी हो

⑤ लिंगभेद नहीं पाया जाता है

⑥ सार्वभौमिक होती है व्यापक होती है

विधाई — भिन्न — अलग-2 हो

Q- जयपुर के बारे में क्या जानते है

Q- राजस्थान की राजधानी कहा है

An — Ans सबका एक होगा

सबके कार्यों से अलग कार्यों को सृजनात्मकता चिंतन कहते है

अपसारी चिन्तन

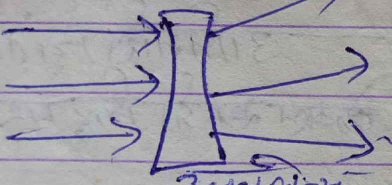

उत्तल लेन्स अपसारी लेन्स

अभिसारी चिन्तन

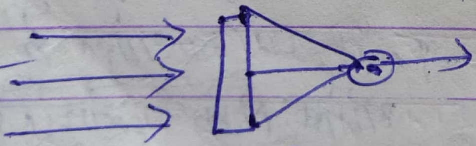

अवतल लेन्स अभिसारी

Q - नयी वस्तु का निर्माण व नवीन चिन्तन करने वाला कहलाता है !

A सृजनात्मकता B प्रतिभाशाली C) पिछड़े बालक (D) मन्द E जड़

Q - (110) 130 - 140 से ज्यादा

सृजनात्मकता बालक नये सम्बन्धों के ज्ञान को इसकी उत्पत्ति के विषय में चिन्तन के परम्परागत तरीकों से हटकर असाधारण विचारों उत्पन्न करने की योग्यता रखता है - आइजेंक

Q - कल्पनाशीलता, मौलिकता, लोचनशीलता, धाराप्रवाहिता, विस्तारण आदि विशेषताओं का मापन ?

Ans - सृजनात्मकता बालक में !

अभिसारी चिन्तन (Convergent Thinking) / निगमनात्मक चिंतन

Q 2+3 = ? Q - (दिये गये तथ्यों के द्वारा निष्कर्ष तक पहुंचना अभिसारी चिंतन कहलाता है ??

अपसारी चिंतन (Divergent Thinking) - दिये गये तथ्यों में कुछ नया जोड़कर निष्कर्ष तक पहुंचना अपसारी चिंतन

दिये तथ्य [नया] - निश्चित निष्कर्ष

नया सृजन आगमनात्मक चिन्तन

सृजनात्मक के तत्व

Q. 2+3 = ? Q.— (दिये गये तथ्यों के द्वारा निष्कर्ष तक पहुँचना अभिसारी चिंतन कहलाता है ??

अपसारी चिंतन (Divergent thinking) — दिये गये तथ्यों में कुछ नया जोड़कर निष्कर्ष तक पहुँचना अपसारी चिंतन

दिये तथ्य [नया] — निश्चित निष्कर्ष

नयासृजन आगमनात्मक चिन्तन

सृजनात्मक के तत्व

धाराप्रवाह ⇒ जल्द से जल्द से जवाब देना : अधिक से अधिक समस्या को हल के तरीके का धाराप्रवाह

विविधता / मौलिकता / नमनीयता — देखने का नजरिया अलग होना / भिन्न होना दूसरों के उत्तर से भिन्न होना — गधा डंकट

विस्तारण — विस्तार वर्णन, व्याख्या की योग्यता, व्यापकता से [विस्तार] [उदाहरण]

पुन: परिभाषीकरण ! — कल कैरसा आकार, अंक

संवेदनशीलता ⇒ अपना Negative Point देखना अथवा Positive Point

मूल्यांकन ⇒ एक बार उत्तर देकर दोबारा उत्तर देना !

सृजनात्मकता की प्रकृति

सृजनात्मकता के प्रमुख सिद्धान्त

(1) सृजनात्मकता का प्राचीन सिद्धान्त - ईश्वर की देन है।

(2) सृजनात्मकता का जन्मजात सिद्धान्त → जन्म के साथ ; जन्मजात होती है। (का पूर्वजों से प्राप्त है)

(3) सृजनात्मकता का वातावरण जन्य सिद्धान्त - वातावरण का पर प्रभाव पड़ेगा / जैसे प्रजातान्त्रिक में सृजनशील होगा।

(4) प्रमस्तिष्क गोलार्द्ध का सिद्धान्त।

बायाँ गोलार्द्ध
⇓
तार्किक

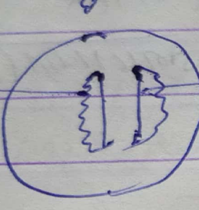

दायाँ गोलार्द्ध (सृजनात्मकता) विकसित होगा। अधिक

(5) अन्तःदृष्टि सिद्धान्त (कोहलर) - सृजनात्मकता अवबोध योग्यता का (सूझ) पर निर्भर करती

(6) अस्तित्ववाद का सिद्धान्त - विलियम कुले का सिद्धान्त - सृजनात्मकता

(7) स्वप्रेरणा का सिद्धान्त) - बाह्य अभिप्रेरणा ; (दूसरे व्यक्तियों द्वारा)
अपने आप (आन्तरिक रूप से प्रेरणा)

(8) मनोविश्लेषण सिद्धान्त (सिगमण्ड फ्रायड) - अचेतन मन - 90% ; (सेकेन्ड्स पावर) Unconsious
अर्द्धचेतन मन (Sub Consious)
चेतन (Conscious)

दमित इच्छा
⇓
अनायास प्रदर्शित
संवेग, भावना, मूलप्रवृत्ति

सृजनशील बालकों की विशेषताएँ :-

(1) यह बालक आत्मविरोधी होते हैं। बाहर - हंसमुख . अपने कार्यों का स्वयं विरोधी !